चतुर्थ अध्याय

मूल पाठ

जाहरदेव की गोर्ट : लौकिक वीर काव्य

मूल पाठ

हां.......
दव सवाई दस टीकरियां
हे बहन भवानी थीं बच्छल थीं जगा
हरे दुदुवन धिनांती कना दई भवानी कुन्न के चौरा है
हे जाये सुरजा कना रहीं भवानी उदर के मंझार
हा चरे सिर पे धर लई भवानी दुदुवन दहेली सेपा है
हे बदली ना रई चोई उदर पे मंझार
हे गलियन फुनी बेहाने डोल रहे राजा गरुदहुवा के
हे बरवे कर रई भवानी गलियन रे मंझार
चरे हाथी हटा ले कल बीरन मेरी राह को
र हो रही चंवरा नीकें उक्त पे मंझार
र कारन लथेया डोल रहे गौरी चौरी गाया को
हो......... चरे हां.......

हूं.....
जब हाथी पर के महाती चिटिया दे कर रए ठनाने ज्यावा है
हे हाथी न कब्ये रानम के कहिये राजा गरुदहुवा
र मद के भुकाये हुनी डोल रहे हुनी बाड़ी चौरा के
रे तैं बढ़ कब्ये चिटिया चौरए रे चोर
हे लोधी हठीली चिटिया ना देखी गुजर जाता को

है बीची छठीली चिटिया ना देखी गूजर बाला की
ए भवानी ने सिर पे संवार लई दुधुवन की दुहेली रे हेप
है हरे ले ले भवानी अपने गुरून के नामा है
है दहिने पांव के ऊठंन पे धूनी की पेड़ी रही दबाय
अरे धूनी पहाड़ भये भवानी बाढ़ी खोरा है
है बोल पे गडियां लगाय रहीं उरब पे मंकार
है भागे महावतिया पहुंचे रजन दरबार है
है गूजर घर चिटिया कढ़िये वाणिज की बन कहा
है मान घटा दये गजियन मेरे मोती गजराज की
हो...... हरू हां.....

हां.....
अरे राजन महाती थैले थैले समझाइयो
भैया मेरे के हाथी की धुराऊं ताड़ दई के घटा दये दुरवा पे नीरई रे संभार
अरे भा कारन हाथी बन घेटी ने पछाड़ियो
हरे कमके ब्यौरे कियो समझाये
है जब महावतिया अरजी राजा से कैसे सुनारियो
ए गूजर की बिटिया कढ़िये बाढ़ू में बन कहा
है पढ़ पढ़ माला मारे मोरे मोती गजराजा है
है जाके धूनी पहाड़ दये बाढ़ी खोरह रे संभार
अरे गड़िया टूटे राजा तेरी बन फसन के बीचा है
ए नई गूजर चिटिया रखवारी तेरे कढ़िये कुंवर नन्दलाल
है बरजोरी लाक्यां अपना लाये कुंवर नन्दलाला है
है बहुवन बना लाये रनवास
है नई तेरी भिट पैठे थारी रखवाना है
अरे जावे मरवे भा मिये राजा मेरे बन धरमन के मारा है
हां...... अरे हां...

हां......
अरे रावन ने पठ्या भेज दये गूजर के द्वारा है
है एक दो रथ दौड़त आये वो आवन रे आव
है घेर लक्क बखरियां कूं गूजर की टोड़ा फांफ रे
है चढ़ आवो हुकुम करे रे फरमान
हरे उजर बुलोवा दो रये गूजर कूं रनधान है
है मा राजा के बोवा बांत लये मा चोरी में घर लईं गनेला रे धान
है वा कारण बुलव्वा दो रये कूं रनवावा है
ए जब मैं वको गूजर जब चढ़े गई बकबक लेवी रे फुरमाव
हरे बुवरा दक्यो कूं राजा गरूड़ारा के है
है पांवन मल्यां पांवड़ी गाठी मल्यां घनेरे दाम
अरे सिर पे मल्यां कैवनी पागा है
है का चढ़ बुलारो राजा गरूड़ता
अरे दो रये बुलोवा कूं मेरे रनवावा दो
है बिटिया ने दे दई पांवड़ी गांठी दे दे घनेरे दाम
अरे सिर पर बांध लई वीं कैवनी पागा है
है चल भये गूजर मिलवे कूं रनवाव
हां अरे रावन ने कुवौं मौड़ा कूं डराव्यो
दो.......हरे हां...

हां.......
हरे गूजर बन्दीवे कूं रावन कूं समझाव्यो
भैया मेरे वेरे बिटिया एकवारी कहिये कुंवर नन्दलाल
है आवे रथ दवये कूं धरम के व्यावा
है हाथ जोड़ के गूजर बनें रये राजन के धरम के द्वार
है तुम कहिये राजा परजा के प्यारी बाप है
है मेरी बिटिया अपनी कहिये जेवड़ें लावउ रे बात

अरे डाढ़ बलोंई मोपै रावन न रंबवाय्यो
हे कौरे नाव की रांव हैं रथें न रार्वे आर्वे
अरे चिटिया ब्याही बन का करे देवा है
हे रुपया पैसा मांगवे राजा झिरा है तो मराय
अरे धीरी मांगवे रावन बोवे रंबवाय्यो
हे डाढ़ बलोन्हैं मोपै वबे ना आये रवे
आवे शौढ़ दे हैं राजा औरी रवभाना है
हे हाथन हथकड़ियां पांयन बेड़ी गरदन तोक ई डार
हे गूजर की बेटी बब रवे हरियल रे बांधा है
हे छोड़िये राजा वम बान बच्चे कुटुम रे परिवार
हे रोम बच्चे ललयां कुटुम परिवार है
हे कर देखें अलयां में मेरे कुंवर नन्दलाला है
हे आवे गूजर बन्दीरे में शौढ़ बये रावन मरे दरबार
हे टूटी खटुलिया गूजर पौढ़ रवे धरम के द्वार है
हे चिटिया गुजरा से रवें धरम के द्वार
हे बाबुल तेरे मुड़ धमक रवे के चढ़ आवें बसुर की रे तापा है
हे टूटी खटुलिया बबुला मेरे पोढ़ियो
हे तैं चिटिया हौवनब मर जाती तो मैं पढ़ती मलयां रे गाव
अरे रावन घर फेर लैनें चिटिया बन बिवाय्यो

हो...... हरे वां.....

वां.........
हरे चिटिया उलटा बाबुल की कैसे समझाय्यो
हे बाबुल मेरे कैसीं बबार गये धरम के द्वार
हे आवीं डार रवे मर मावीं की गाजा है
हे बबुला समझा रवे बेटी ऊं धरमन के द्वार

हे तेरें था दिन सुनी पहाड़ दये बाड़ी छोरा हे
हे बाचे राजा मांग रहे लाख्यां चोरी रे बारम्बार
हे राजन लाख्यां कर देर्यो चिठिया ना पीछे घड़ा के पाना हे
हे मेरे छूट गेई भवानी कुटम रे परिवार
हे का वर्जो दिखाणों में का करेड देवा हे
हे डाढ़ कोन्हे मांग रहे रतन के द्वार
हे बाचे टूटी खटुलिया चिठिया वन पोढ़िये
हे बदले दे रही भवानी कुड़न के द्वार
हे तुम सोख्यो मेरे बबुवा दुखनियां नींदा हे
हे मैं नोहरा रोवें दों राजा मगुलजा
हे गङ्गियन चौत हुवा दों कहिये धाना हे
हे बाचे निन्दियां लग गयों चिठिया के भवारी रे बाप
हे छटवा टार दये भवानी ने दिवाली राव हे
हे जीवन पलका ले गई भवानी रे उड़ाये
हे राजन धाया डार दये भवानी ने माता जी के देवा हे
हे वह रये कुंवारा माता जी के रे धाम
अरे जब राजा पर भये भारी ककचोला हे
हे के मेरी ने करे उबारे के चढ़े भौजी रे
हे कैसे कुंवारा लग रहे जब मेरी फांक्क को
हे जब माता जी की चिठिया उनका रहें धरम के द्वार
हे विपता की भारी चिठिया आ रही जब तेरे देव
हे तेरे कुवें सोये जी था न्निमि नई बच्ये भवारी रे ज्वाव
हे मोहे न रखिये के कहिये भवानी बाला हे

हो...... हरे हां......

हां........
हरे माता जी ने पांचव फेंक दव चट पाडू

मेरे भैया सिर पे रंच गई कैजनी रे पाग
हे गरे काँठी माना जी ने डारिदी
हे मेरे भैया भारव तक ती रे उच्चार
हे घत भये माना जी कांतन छिलुका बाच दी
हे भैया मौरे डांगन में चौरी रोक लई चिटिया की बारव रे बार
हे भवानी हरियल बांस कटा दौं छोड़े रंगवा दौं डागन रे मंझार
हे मन्दिर बनवा दौं भवानी धरम के द्वारा हे
हे आवी मरवी करिये भवानी माना जी के रे डांग
हे सब भिव फूर्वे भवानी कुटुम रे परिवार
हे चौरी रोक दई चिटिया ने उस डांगन रे मंझार
हे मढ़ये लगा दई माना जी ने छोड़े रखवाइयो
हे डाँगे बवा दई चौरी दे गई रे बार
हे चिटिया ने बनवा दे शिव जी के मन्दिर चाना हे
हे निवदिन द्वार रही शिवं भोला रे नार
हे मन की मन भवानी मांग रई रे मारी हे वरदाना हे
हे शिव द्वारे भवानी ने बारह बरसे रे वंभार
हे बाबा भोल रई शिव जी की कल धरम के द्वार हे
हे चिटिया किस कारन दे सेवा कर दब बारई रे बार
हे निवदिन के दे भवानी वरदाना हे
हे चिटिया बरवे कर रई भोला दे न्याय
हे दबये भोये दो कन भाय पतवीरा हे
हे जाने बनवे पछोरे राजा गुरुकुला
हे उन गढ़ियन में चोव हुवा दे धाना हे
हे शिवं की चिटिया से रहे सम्भाय
हे मावा तेरी बुढ़िया हो गयी पिता के बुढ़री हो गये पार
हे तेरी मा गयी भवानी गवन की पावा हे
हे कैसे में दे दौं दो बाच पतवीरा हे
हे चिटिया बरवे पुकार रई मंदिर के द्वार

हे मैंने तप करे थे भोला थे जी के जाजा हे
हे ए जब शिवु जी ने दे दै भारी लाड़ बरदान हे
हे जबये चिटिया उपरन चाम्लि के वे घाट
हे उल्टी धारन फुला भवानी जवां बह रही
हे चिटिया उतिया दियो पधार
हे उलियन में फुला तेरी आजाद्यो
हे देवरी नांकव बीती दी बैठे बीरन रे कुम्हार
हे वाके चाहिये अपनी माता के जोरा हे
हौं....... अरे हां...

हे दिन के फूटे सिन्दुरा रे नाये
हे चिटिया चढ़ आरी चंबल के घाट हे
हे अरिये उंग उखियन के घमसान
हे वाके उपरी भवानी चंबिल के घाट हे
हे उल्टी धारन में फुला रहे बहाय
हे दोरउ वे चिटिया ने बीती अपनी बढ़ाद्यो
हे फुलमा ती आ गये बहिन जी की गोदन रे कंमार
हे चढ़ आरी रहलादी भरम के द्वारा हे
हे देवरी मांकव हो गये फूले लाल
हे मैया मेरी तैं पढ़ रखिये जोरा हे
हे रानी माता बहिन जी जो रही समझाय
हे वज़ की विपता काटी मैंने माता जी के डांगा हे
हे डुवर के बालक जिनके वे आवें रे दुराय
हे तैं हुआ दे दे वे माता जी के डांगा हे
हे जब भवानी जब उरने में समझाद्यो
हे तैंने पला फूले नहीं कर दे भारी कांफ कौं
हे जब के शिव जी ने दये थे लाड़ बरदान हे
हौं..... अरे हां.....

हां.....
अरे मदिन जी ने पार क्यों धरनी माता के कन्होरी चोरा है
हे गगन की उडियां घटवां रहें धरम के द्वार
हे मेरी मय्या के जरिये दो बीरा हो
हे दुनियां बकार भीग रहें धरम के द्वार
हे मय्या बिल्कुल बूढ़ी जरिये पिता के धन दुवरी थे बार
हे जिन गुजर के जरिये बरोबे दो बाबा है
हे कै करुणानिधि भूल गये अपनी अवतार
हे कै पैमाता ने उनके दुःखेलियो
हे मेरे मय्या के सिद्धुं ने दे दे वरदान
हे इन कुकुन के कैसे जीवन बालक देखियो
हे मय्या मोरे अवतारी जरिये बारह रे बार
हे कुछ दिन में मोरे बीरन उनके पा थैंई मेवा है
हे आके चिड़िया चढ़ गई माता जी की रे अंग
हे बिपदा की मारी दौड़ गई भवानी धरम के द्वारा है
हे बारह बरस मंदिर द्वार दये शिव जी के अंबार
हे कांकन में लग गयी था बनरख है बाबा है
हो..... अरे हां.....

हूं जं....

अरे भवानी ने बनव्याही ब्योरन पिलाये दुधा है
हे दिन-दिन दूने रातन चौगुने रहे दिखाय
हे हे भक्तिा की उमरिया में दे रहे जब टिटकारा है
हे टटवा टार रहे धीरी के मरन के द्वारा
हे कारन हे डबेरे लवैया धरम के द्वार
हे माता जी की आंगन में लवैया रहे कराय

हे ऊंरत मेरे बीरन बाग ये मान हे
हे लछेया मा बसताये बीरन ने सोड़न के द्वार
हे रखवारी बान गयीं तीं अन्देया ले गयो अब डांगन के मंझारा हे
टोटा ले ले बहिन जी ने घर ले गदेलन रे बांध
हे बनती जा रही भवानी उई थाना जी के डांग हे
हे घनी मतुस्या काल रई बापे अनरेख रही हाय
हे ताने कुंवर जी रये दुखनिया नींदा हे
हे बातई चिटिया ने हुवर खींच दये उलीचन रे
हे जब निंदियां जागी कुंवर की मेकधारा हे
हे लौट चलये बहिन जी चलये अपने धरम के द्वार
हे अपना छोड़े अन्दरूवा जा काढ़ी पे डांगा हे
हे गई वो भवानी चलये अब भेवन की दुकान हे
हे दातें बछेरा लिये भवांय
हे जा चढ़ के पेढ़ों में नगरी फांका हे
हो..... हरे हां.....

हां.....
हरे बहिन जी छापरी जो कैसे चमकावयौ
हे भेवन बापन कोड़ी पांवन पांगरी बांधन अन्धरा बाडिये संभार
हे जागे मन देवी मेरे बीच बारा बरस भटधारा हे
हे कैसे मांदे धरा देरव के रागव संभार
हे जा चढ़ जाये मेरे बीरन नारी फांक हे
हे मेरे बीरन ऐसे अटका रहे अटका
हे बाच बिछुनी चिटिया बिछुरे नारी आवा हे
हे लगन दे मेरे बीरन बढ़िया उरवा मऊ के बजार
हे ले हाँ घोड़ा अब बढ़ियन मोला में

है मेरे बीरन पवन लगे रें फहराये
है ले दौं घोड़ा या हरियाने देवा के
है यारें मथव गये भारी के द्वार
है [illegible] तैं चल्ये भवानी मेरे कुड़न के द्वार
है कल्याणी क्वीरन के डुबुवा लिये निकाल
है रव रव करव्ये या मैयल के अस्नान है
है डुबुवा के वंपरव ओं बरन के दा चाये
है चारें मार्यें या घोड़ा पत्ती पीड़ा के
हो..... हरे हां

हूं......
है बहिन मोरी द्वापरी को समझायो
है मेरे लड़ैते कल्याणी क्वीरन के डुबुवन मा पड़े रे चारऐं रे चार
है मोरे रैंधा रवे बीरन अब भारी ये डांडा है
है द्वापरी भवानी को रवे समझाय
है तैं चल्ये भवानी मेरे कुड़न के द्वार है
है कल्याणी क्वौरें बीच रहें घेरे लगाएँ रे गाय
है डुबुवा डुबिये भवानी कुड़न के द्वार है
है मेरी पत्ती एक निबरिया के झोंका लिए छोड़ाये
रे मनती चढ़िये भवानी या मैयल के अस्नाना है
है चारे लव लव करव्ये अस्नान
है मैं मेवन मनयाँ चार्यें घोड़ा पत्ती पीड़ा के
हो...... हरे हां

हूं......

चरे मैं घरियां बदली या रहें भवानी पा अब डांगा है
है पैदल पहुंची भवानी कुड़न के द्वार

हे कम्यानी कहीं भारी घमसान है
हे एकै लाई भवानी बीला टीक रई हुड़न के बार
हे बांध गये मरोधे भवानी हैं घेई क्य डांगन के मंझार
हे उनमुन के बदले दे देई गुरकुला
हे परे भिल गये मोई एकी डांगा है
हे दुधुन की देर्य दे गयी भेयत के बार
हे भेयत सौ रहे अपने भवन के मंझारा है
हे भेयत सौ रहे निबुलिया भिवना डौर रई धरम के बार
हे भर भर आयें भवानी मे भभया के टेरि सौ
हे निबुलिया उलया दे रई भवन के मंझार
हे मेरे पवि की सौ रहे सुखनियां नीयां है
हे मैं दुवन डौर रई भेयत के मंझार
हे मैं सुनवों बिटिया फिर तेरी धरम की आपा सौं
हे निबुलिया कहिये पतिव्रता रे धरम रे संभार
हे दोवत न आवत थी अपने पाता है
हे जब भेयत के आमन पड़ी रे आज
हे दे चढ़ियां निबुलिया के हुकुम फरमाइयो
हे तें बदली जावे निबुलिया धरम के बार
हे को कर रहो आवे भामन की जब मेरे धरम के बार सौ
हे कौने देव उ भैया बाधये धरम के बार
हे हम तो नदिया जावे पतवा दे पानी सौ
हे बदली वा रई निबुलिया धरम के बार
हे जब उनौं देवी भवानी की धरम के बारा है
हे मेरे पीवर के मरतन मइयां गांठी मइयां पनेरे बाम
हे हमें नई देने भवानी पे दवी दे दुवी है
ए तें बंध लवे भवानी बोई के बरा है

सो...... बरे सो

ई......

ए भवानी निबुलिया के रई समझाय
हे माये हुआ चलये धरम के द्वारा है
हे मेरे बारे गाव बरकांय
हे मैं सेवा लखये है धरम के द्वार है
हे निबुलिया उलथा दे रई भवानी के धरम के द्वार
हे मैं बिटिया सौंपत स्वामी के न जाड़ियो
हे मा पलकन पे सावों रे उतार
ए वै चलये भवानी मेरे भवन के मंझार
हे उत बिछियन पे मामा पीढ़े कुमार
हे सोई जा लखये मामा के पाये है
ए चलदी भवानी पहुंची भवन के मंझार
हे झूपन छिनवा भवानी ने भैरव के मारि दो
हे पी चरनी के लो जायें
हे आंखन देखत भैरव चरन भवानी के गहि जाहि दो
हे मैया मेरी वे लौ गयो रे झूवर भगवान
हे माता मेरी मैं तेरे का आरो आथा है
हे भैरव के भवानी रहीं समझाय
हे मेरे मामा वै चलये बा कुमर गढ़ा की पारा है
हे एक लायन मटिया लिये बुलाये
हे धर चलये मामा मेरे निबुलिया के सीवा है
हे जाये मटिया ढारिये मटवाव
हे लायन निबुलिया ना मटिया वै बांधियो
हे भैरव ता चला बुमा रवै धरम के द्वार
हे लायन बना दई निबुलिया ने बोड़न की पीढ़ा है
बोहेरा भा रवै धरम के द्वारा है
हे पवती पीढ़ा के बोहेरा टेढ़े टापट रे पड़ जायें
हां अरे मांदये बोहेरा भैरव ने डूबी पीढ़ा के

है मां दये कोड़ा टेढ़े वे लखमिया ढेढ़ई रे ग्वार
अरे पवन बहेरा माय भैरव मे जमा लये धारन मँझार है
अरे भैरव गवरथिया भये भज अपनी बहन के धरम ब्योहार
है दाव नवाबी भैरव चोई रहे मटियाय
हां वां तेजा बन बैटी के पहुंचे बैटी के काढ़ दुवार
थारी भैमलिया ने तेज्का बनाये नगर दुवार
हां थारे दुरभा बैटी भैरव वाँ रहे उमकाय
है बहेरा जाये वां से बाहें रे दूजी भांवर
है भैरव बहेरा ले चाये रावन की रे रमनाव
हां रावन के तीरें भारी मति भैया बनाम है
दूजी भांवर के बहेरन वे क्वारी न करों मेरे भ्रमन के घर जाये मान
हां ले चाइये बहेरा भैरव पैली भांवर कौ
अरे बैटी राजा ने भैरव रहे समझाया है
थारे कन्हैया पैली धार के बहेरा टेढ़े पड़ जायें
है तावे मे दूजी भांवर के बहेरा ले चाये धरम के द्वारा है
तावे थारे कन्हैया मे सीता दये कराय
हां भैरव दूजी भांवर के बहेरा ले गये अपने धरम के द्वारा है
हां पैली भांवर के बहेरा मेरे भैरव काढे ले चाखियो
पैली भांवर के बहेरा थारे दुरभा ने बांधे घुड़वाल
हां अरे थारे कन्हैया भारी पधारी रनधीरी वाँ लगाइयो
ये लगा रहे मुख बैठन ले कड़वार
हां बैटी राजा कथा के उपर भर बनाव है
माटी के बहेरा मेरे वीरा झुक पड़े धुर जायें
हां उतरन ये बनावें लगा दें भैया पूना ढ़ार कौ
तावे सीतां ले दी बहेरा भारी रे गोत संभार
हां अरे बैटी राजा की थारे कन्हैया समझाइयो
ये मोत बहेरन क्वारी जिन करो बारी बैना मेरी गुरुजन की घट मिट जाये

हां हां देई बोहरा सीधे से जाव हो
बेटी राजा ने सत्य संवारे गुरुवन के उचारे गुरुनाम
हां आधी रात के जन्मा से थारे सूरमा ने सत्य उमारे समाइवें जाता है
पड़ पड़ अझारी थारे सूरमा घोड़ा के मारे अंग धवे
दे डेरे पेली अझारन के भारज के फुरेरी घोड़ा देता है
सुनी अझारी नीला जी के नाम पे भारी बड़े ब्यान
घोड़ा की पैंजन की घोड़वालन की मांझ है
तावे थारे सूरमा ने डारे दरियाव के घाव
जब घोड़ा थान लगी ने दरियाव ने धाता है
इतने वचना बेटी राजा के सुन से
लगी मुझें थारे ना सूरमा के बैरी देव
बेटी राजा से बीरन से उचर अरे जवाब
थारे कन्हैया के पावें लगी के कुटुम घनेरे थाव
का कारन तैने धोरी राज करी त्यारी है जाके न्यारे दिये सुनाय
इतने वचना थारे कन्हैया बहन के सुन लेता है
न पावें लगीं न कुटुम घनेरे थाव
बांगर की ने गौके भवानी समाइवें जात हौं
राज करते अवीरौं बैन सु मनाईं बाप
सुन्ह के लाने बोहरा जब रही माता जी के देवा हो
हो....... हरे हां....

हां......
हे बेटी राजा बीरन हां उचर अरे जवाब दे
ना बात बरस की तोरी उमरिया बोंठन कुँ दूध की रे लार
हां अरे तैने देखे ना कन्हैया सुक के दावां दे
बांगर में घर के लाड़ले पटरन के घमसान
तोरो तीला छुड़ावे तोखा देवें हम दुखी बान

हां हां तासे बरजी मान ना लाड़ले मदन के द्वारा है
बेटी राजा खों कन्हैया रये समझाये
हो जो जगत भवानी फेर फेर नईं आवन जावे री सुना है
फेर फेर भवानी मानुष के नईं धरने अवतार
अरे फेर फेर भवानी भोला नईं देवे काऊ वरदान
फेर फेर चोरा नईं भावें मेघुल रे पहुली भांवर
हां अरे फेर फेर भींजी न टारी भोला की गढ़ सब माथ हो
तासे भांवर झुके दिन और रात
आज भांवर के काज नईं आवें भवानी दुलनियां नींद हो
अरे तासे मचे चकोरीं माई नाथ के
हो..... अरे हां

हां.....
हां बेटी राजा को चारे कन्हैया समझाइयो
आरत उतारिये भवानी अपने हाथ
हां भर भुज बेटी बेना को देवे आशीष
तासे बेटी राजा भांवर मेरे पूरे हो जायें
हां सत्य कंवारे बेटी राजा गुरुजन के उचारे नाम है
बेटी राजा वीरन को रहीं समझाय
गंगा जमुना के पानिया बड़े वीरन की चढ़े देव की धार
हां भांवर मारे घेरा जमेरा पाके टेका है
चारे कन्हैया चौरी फोड़िये पूजन रे पाय
हां मेंढ़िये मिलना ये काजी फांक को
हो जो...... अरे हां

हूं.....

जब इतनै वचना थारे कन्हैया के बैन सुन लेत हो
थारे कन्हैया मे लटक पड़े दोव पांव
हां चढ़ा दये घोड़ा क्यये खूंटी बाला है
ए एका बन बाले दुरमा वोई गये झंझाये
वैसा बन पहुंचे क्यये बैरी देवा है
राजन की कहिये पांचो ये क्वार
हां अरे पांचो की पंचवटिया झुक रई है मांझधारा है
थारे दुरमा की चौदां लग लग जाये
हां के लंका दीने लवी के मन मैं लागि दमाला हो
थारे मीता के उगै दुवरे भान
बाप जाये के चौदां लग रवे बैरी देवा मैं
न लंका दीने लवी न मन मैं लगी रे दमाल
थारे कन्हैया न उगै दुवरे भाना हो
राजन की क्वाई कहिये पांचो रे क्वार
हां वां बाई की पांचो पंच भटियां झुक रई दिन औ रात
हो पल के उजीते बाबा हो रवे है
हो..... अरे हां.....

हां......
जब पांचो की भटियां झुक रई थे दिन और राता है
हो कवे पुरखय्या नाथ जी अबै लटक कौ पछियाऊ
भटिया के झोंका लग रवे कहिये नौके धरम के कौर
अरे क्वारिया का भड़ियां फेर रही दमकाये
अरे घोड़ा वाले कौन रे देरै आवन जात
कौन देव वां के मे वाज करे तैयार
जावें प्यावें मई दीये दुकान मे मांझा हो

ग्वरिया घर दीनी मायरी जाने फेरे रे बजर की बात
हां मक्खन लौंका ले गये जावन दुबारा है
भंवरा मद पीवे मोरी रे दुकान
हां कौन देव है तोरे बावन भये कौन देव हां जाता है
अरे रावन की बधाई कहिये है मेरे मांझिदार घाट
घोड़े बाते तोते पिलाइया मोरे मिल बाये मिल बात
हां भंवरा मद पीवे बारे कन्हैया मोरी दुकाना है
अरे तैं कहिये लड़का गुजर के का जाने भंवरा के स्वाद
हां कहिये पिवइया तैं बट्टी बांह को
इतने बचना बारे कन्हैया सुन लेत
बारे कन्हैया की आंख ललामी पड़ गयी फड़कन लो मुंह के बात
हो चोरी ग्वरिया चोरी कहिये मोहे चोरे करिये बचाना है
सब संभारे कथा मे लगा लये गुरुजन के पूरे ध्यान
हां अरे एक ग्वा ग्वरिया के मुवरा उन परियां करत हो
दूजी ग्वा में घुस गये ग्वरिया के मटवाल
हां बारा माटी बारे दुरमा मे मुवरा पी लयो
दूजी ग्वा में वेरा दयी लुढ़काय
हां अंधी मड़ैरी बारे कन्हैया खाई कर गयो
बारे दुरमा भजवारे हो गये री ग्वरिया की रे दुकान
हां अरे ग्वरिया तैं अपने अब लखे दुकान है
मैं कबलौ पा रहो ग्वरिया तेरी के रखवान
हां बड़ा भये बैरा दुरमा मे खुरी भाला हो
ग्वरिया लौट चलत के घुस गयी अपनी दुकाना है
ताके अंधी मड़ैरन मे नजरें पड़ जायें
हां ग्वरिया मारन लगी मइया उतीपन मूड़ है
मैं न जानो कब बछिया आगये दुवरे भगवान

हां भागत जावे कलरिया रोवत जावे डीमरे बोरा हो
वीला धारे वीला थाम्भि रख गद
हां मैं भागत आऊं वीला वाले वीरो बाबा हो
हो हो....... हरे हां.....

हूं......
धन्य धन्य वे घड़ियां जाईं गौरे घड़ियां के परभाव
उन घड़ियां में वा कलरिया लगा रई वीला के वान
हां इन वीला वाले वीला थाम्भि रख के
हां ना मानो मेरे महाराज
मानव मरोवे वीला उनरा रोपे अपनी दुकान हो
हां मैं ना मानो चरन छिपाये बंती महाराज
हां मैं अभागन मानव आई और पाव है
जावे वीला थाम्भि वीला वाले जा न सके
हां बारे सुरमा हां कलरिया के वा गये मोदा है
जावे वीला थामे बरे रख गद
हां बरे कलरिया ने गद लई वीला की सखेती बाग है
हां कलरिया चरन पटोवे और बिनती के करे ख्याल
मोरी चूक चूक वीला वाले करिये माफ
हां छोट मलत या कलरिया तै कहने मलत है
हां इन करिये लड़का तै कहने मलत है
हां इन करिये लड़का सुघर के का जाने मथिरा के स्वाद
हां इन करिये पिलाया कलरिया करिये खट्टी छांछा हो
जब इतने बचना कलरिया जधा के सुन लेता है
हां ह बरे ओरे वीला वाले मोरी गलती पे न करिये ख्याल
हां मानव मरोवे वीलां उनरा रोके अपनी दुकाना है

और मोरे ऊधा टूटे जनम जनम के रुजगार
और ऊधा जी तुम्हारी रोटी मोरी मोरी कहिये पेटा हो
ऊधा जी के ग्वरिया के आगये मोद हैं
उठा मुर्द ग्वरिया हाँ गईं र कवा
हाँ लौट चलत जा ग्वरिया अपनी दुकान
हाँ और भर जाये भारा चोखे फुला ह हाँ
जब चलत जाये ग्वरिया अपने रंगल महल को
और लीला को चढ़ाये थरी देवा पै
हो..... अरे हाँ.....

हाँ.....
लीला चढ़ा गये लहुंरी जात
रुका बन जावे कन्हैया और दोई गये मंझाये
हाँ लीला बन को हेरे सुरगा मांझेदार हो
डेरा डारे कन्हैया मे मांझेदार
हो बन गुरिया की होली उन घड़ियां सुनत लीला हो
मारे कन्हैया पांव और पुकारे धर फेरें मुंह पे हाथ
हो री गुरिया तोहां मैं जाये चिरांजी सुनाइहों जो
वरी लिया भये गुरिया तोहां भवारी हुआ मैं
हां सुन हराथी फिन कहिये गुरिया थरी देवा है
हो री गुरिया मोरी जीव घटे न माय
थरी पे भिड़ारे डारिये गुरिया हरे मयर भिहार
चरन महारे गुरिया झंडन लगी हेरत चारों ओर
हो मोरी कहिये कारी मोती होरा हो
करियल मोरी कहिये ऊपर धरे अपना
र रावन के गोदी लेवे जन्या से लोग
मुचलिया जावे कहिये मारऊ और

जब मुरलिया उतरत आवे अरे पीरा की ओर
पीरन की थान पै बैठी रे सुमरत सांझ
हां रांधिउ रे बैरी ह पै सुनाये मुरलिया रे ह धैया दूर
राजन की धौरी चरा रहीं सुरमा धौरी ग्वार हो
करियल लोरी कंधिये ऊपर लाधम हो
अरे अरे गड़रिया लेत कंधिये डंडा मारी पै ढोर
फारत लावे सुरमा अरे चरधिन की ओर
अरे बकरियन तुम किनकि मेरे चरधिया तुम किनकी चरा रये धौरी गाय
जाके ब्यौरे मोरे ग्वाला दिये बताय
खोट बचन कै चरधिया अरे सुरमा सौं रये समझाये
हां हम राजन के कंधिये चरधिया गोपी ग्वाल
हां उनह की चरा रये धौरी गाया रे

हो....... अरे हां........

हूं......
पै मुरलिया वारे सुरमा सौं रई समझाये
ग्वाला और कन्हैया की फेरई करे बखान
अरे हम राजन की चरा रये ह धौरी रे गाय
अरे इतने में वारे सुरमा ठाढ़े मन भरोदें रांधिबो
वारे कन्हैया मनाई करें विचार
अरे जिनने बजा दई मुरलिया प्रेम की धौरी मौका रे हो जाये
अरे धौरी मुंद दई करियल मुंद दई ऊ धर रे जाये
अरे जब देंनी चरधिन हां दुबौली रे मार
हां मार भगाये गवलिया रे मांझधार
हां भागे चरधिया राजन के दरोबारा पै
हां हांथ जोड़ राजन से विनती करे रे भारी रे पड़े लाचार
हो रे राजा घोड़े वाले ने हमखां देदई रे दुबौली मार

हरे चिनने बचा गई मुरलिया प्रेम की रे धौरी मोहन हा जाये
हरे धौरी होगयी मैया राजा मांफिदार
हां ताये भागव आये राजा तुम्हारे दरोबारा हो
हां अब नगर बदल गई राजा की कहिये भरे दरबार
हां राजन फौजन साज करी राजन ने तैयारा हो
हां जब सब गये घेरा बन के चहेरा रे मंगम दरबार
हां उगरत आवें फौजें ये कहिये मेंफदार
हरे पथरा मुर ककरा हो गये ककरा मुड़ गये होर अगिन की धुर
उड़ा जब धुरा आसमान में जाये सूरज भये लोप
हो ताये भरे सूरज भा हो गई ही अंधेरी रात हो
हरे मीरा अनुनिया को कथा भी रहे उमकाय
हां का कारन ये सूरज हो गये लोप हो
हरे मीरा अनुनिया कहिये राजन के हुकुम के ताबेदारा हो
हरे कारन हो सुना रहे मांफिदारा ये

हो..... हरे हां

हूं.....
हे राजा हे मारे फर्मांदी उचर बोलियो
मारे कन्हैया राजन की फौजें चढ़ आवें ये डेढ़ हजार
हरे दल के मारे पथ्थर के मुर कंकड़ भये कंकड़ से मुड़ भये अगिन की धुर
हरे उड़ानी धुरा आसमान में ताये सूरज हो गये लोप
हरे मारे कन्हैया ऐसे हो गई अंधेरी रात हो
मारे कथा में सत्य उबारे उबारे गुरुजन के गुरनाम
हरे बलाधारी क्या कहता रहे रे मांफिदार
हां हरे क्या पथर मोती बरसा रहे मांफिदार
हां हरे ताये फौजें मोती बीन रहे रे भर भर फौर
हरे मोती बीन बीन भर भर फौरी उगरत आवें अपने दुवार

थे थावे बखत वा रवे अपने धरम दुवार
हां थारे कन्हैया मे गोरा बढ़ा दये हरयाने गांव
हां भीखा जगुन्निया थारे सुरमा की उपर करें बनाया हो
थारे सुरमा मेरी मरजी पर करिये ख्याल
हां गोरा रावन बुववाइये हरियाने गांव हो
हां बिटिया ब्याही हरियाने में वरे पूरा जाट
वाये गोरा बुवाइये बाधी झांझ है
भीखा जगुन्निया के ऊधा थी मे बुने बचपन है
थारे ऊधा थी भीखा हैं उपर करे बबाव
हां लौट बखत वा तैं भीखा जगुन्निया तैं हरियल टोड़ा झांझ है
वरे मैं देखूं निमना हरियाने का
हो..... हरे हां.......

हूं.....
गोरा दोई बढ़ा दये हरियाने गांव
हां रक्षा बन चाले सुरमा और दोई गये मंझार
देखा बन पहुंचे सुरमा के बाघर पार है
याद कुआं नां बावरी था पनी छुपी पनहार
हां था पनिया भर रई थी बेटी पूरा जाट की
थारी जटनिया की धौरी पे बरसे पड़े थायें
हां मन मचौदें नांदे जवांनी मनहु में करे विचार
जटनिया मन में विचारे रे था धौरी गाय
फिर गोरे मन में था रई था बछुला की रे धौरी गाय
हां वा कारन ते छोड़ मालों ते बायो धौरी पुंडा थारा हो
बारह गांव को चौधरी और देरव की सरदार
वरे कौन बनीते हैं धौरी बढ़ा दई मेया पूना के बजार है
बोरव री जटनिया गोरे थारे की रई रे समझाये

हां कौन देव ने तेरे बावन मये और कौन देव हां चाये
हां अरे धांवें च्यौरे धौरे वाले सुनाज्यो
हां कहां से खरीदी जा धौरी गाय हो
बेटी ने थारे ऊधा उदर देखियो
अरे धौरी मैंने खरीदी पूना के बजार
हां पंचन बाके जुआ दये मैंने घनेरे डाढ़ हो
तावें धौरी ते जा रही हरियल दौड़ा ते फांक
हां बाय के चिवराम हरे बछड़िया हो रहे धौरे सागर के पार हो
नटनिया घोड़े वाले हां फेरई करे जवाब
धौरी भौंरा वो रहे धौरे वीरन को भये गुजरात
हां तावे सुनी बछड़िया धौरे बाके टारियो
तावे बरवा ने टारे समाज राव वे
हो..... अरे हां

हूं.....
हे हतने बबना ऊधा की सुन लेना हे
अरे ऊधा की बछड़िया का उदर हे बताया हे
हो री बछड़िया झूठे बबना जिन बोलिये गंगापार हे
हां मोल बिसाई धौरा बछड़िया मर कोरी जुआ दये घनेरे दामा हे
जाके मेरी गलियां गहरे पड़ जायें
हां तावे लोट मचल जा बछड़िया अपने रंगई मचला हे
हां हतने बबना बछड़िया ऊधा के सुन लेव
बछड़िया ऊधा ने फेरल करे जवाबा हे
अरे घोड़े वाले कबी पुजन गई थी मैं अपने माई रे बाप
हां पुजन छोड़े थे मैंने अपने मतारी बापा हे
हां धाय पैले पेड़ बबूले फूला रे जाये
हां बछिया गई छाड़ी तैंने बाबुल रंगारा हे

अब ऊषा जी ने वस्त्र संवारे गुरुजन से लगायलयें ध्यान
हां अरे कलाधारी कला फैला रये या गंगाधार है
कारी की गोरी करी गोरी की कर दई लाल गुलाल
हां अरे फेर बदल के लगा दये जाँ अरे ऊषा है
ओ री कलवरिया तैं अपनी धोरी या रे मनिहार
हां अरे तैं अब आवई गंगा पारा है
गोरी पैंचिन डालिये बटनिया सलोनी डार
हां अरे इतनै कहना धारे ऊषा के कलवरिया सुन लेता है
जा रे बटनिया अपने अरे मनवाल
हां रे कलवरिया तैं गोरी गोरी पाऊं लोके बाय
हां अरे अब ऊषा को कलवरिया उधर करे बनाव है
धीरे धीरे चाले तौला भारी गंगा के कड़ा
हां अरे गोचरा लैके रखिये धीरे चाले गंगापारा है
जो लौं मैं घर जाऊं नगर की सेप
है बेरी अब लौट बदल के ऊषा की कलवरिया वा उधर देख्यो
गोरी कोंचावो चोरी करे भागे आधीरात
हां अरे हम बरदानी कहिये भोलानाथ को
तातैं डेरा डारें कलवरिया कछ गंगा की रे पार
हां अरे कलवरिया ने उड़री पे कुड़री धरी डुकली पे धरली डुकेली खेपा है
उगरत धावे बटनिया अपने रंगमहल
हां अरे जिनके पैयां धरन को न पांवा है
एका मन वाली बटनिया दौड़ गई रे मंझधार
हां अरे कैसा मन बटनिया पहुंची रंगमहल के द्वार है
ये सारी गगरी भिगोयी धरी डुकवा टांगी उरव कीला
हां रड़ियन खिड़ियन चढ़ गई बटनिया जन के घर दई कुंभकरन पे ताता है
हां बटनिया के पीयरे रंगमहल सो रये दुलनिया गींदा है

हां अरे वाने पिछोरा पीचरे के ब रंगड मल्ला है
हां बैठी था रावन की कचड़िया मींदा है
रावन की आंख ललामी पड़ गयी फड़कन लगे मूंछ के बाल
हां अरे री रनिया का कारन कारन दैने क्या दये दैने कचनियां मींदा है
ओ री रनिया बाके बांसे ब्यारि दिये सुनाय
हां अरे बाय बोड़ बिजली करे चटनिया मारी पड़े लाचारा है
हां ओरे पीचरे मोरो छूटो मायको तुम्हारी बनी ठनी रे ससुरार
हां मेरे एक घोड़ा बालो पेड़ दमूलो माई बाप ही
पावे चोरी ठारी पीचरे गंगा के पार
हां अरे वाके मुवरा रांपने वाला कुंवर पारा है
हरे आन न पावे मैया मेरी मैया के
हो....... अरे हां.......

हूं......
अरे जब इतने बचना पीचरे चलवरिया के सुन लेता है
चलवरिया हां पीचरे फेरत करे जवाब
हां अरे ऐसी ससुरारन में बागी लगे है बड़े भार में बात है
गली के वारे हम मुवरा गई अरे हम गंगा के पार
हां अरे जब इतने बचना पीयरे के चलवरिया सुन लेता है
चलवरिया पीचरे हां फेरत करे जवाब
हां अरे काये के लाने पीयरे तुमने धरे मा मरद अवतार है
हां काये के लाने बांधे बालड रे हथियार
हां अरे काये के लाने रंगरीकत पे तुमने जमा लई ससुर की लागा है
बेरयाई के लाने तुमने गवाये माता के मडुनिया दोष
हो ओ अरे मेरो मन भर गयो भैया घोरे वाले के साथा है
ह ओ रे पीचरे घोड़े वालो मेरे मन बस जाये
हां अरे जाऊं मैं घोरा वाले के संगड साथा है
ओरे पीचरे तोरी गलन गलन करो भारी रे बदन

हां अरे सतभांवरे मैंने छोड़े डरयाने गांवा है
जाके मैं अपनी बबुला की डाकों पर घोरी रे गाय
हां अरे मैं घोरी की पीछरे डारीं गोबर की छेवा है
हां अरे आज इतने बचना फलवरिया के सुन लेता है
जाके बारे पीछरे फलवरिया ह श हां रहे समझाये
हां घोरी फलवरिया मेरे बचनन के करिये स्याला है
अरे या मझांनन में भारी मारपीट हो
हां अरे अखाड़ा भारी मेरे बन रम्मिया लग रही
अखाड़ा के पीछे बाउन रे लग जाये
हां जाके घोरी बरवन को दे दे लंबी घोरा है
हां मझांकन में भैया मेरी रम्मिया है परलय
हां अरे चोरे नचावे मेरी बलम्मियां घोरा है
जाके बरछी भाग या रम्मिया भाग के घोरा है
हो..... हरे हां.......

हूं.......
फलवरियां ने घोरा के बचना थे संभार
फलवरिया फेरन करे बनाय
हां अरे जाये के लाने तुम्हें धरे अवतारा है
पुतरा थे पुतरिया होवे भेंड़ा डाड़े देवी ब्यार
हां अरे पीछरे मैया मैं रखी सलोनी काजा है
मैं तोरे लेती कन्निया रे दान
अरे पीछरे तुमखा मैं पहनाती चुरियां हथियाकांचा की
तोखा पीछरे मैं पूजती कपला रे गा
हां तोखे पीछरे मैं भेंट करती सिया छिलोरा है
तोखा दुनिया में धरती रे बैठाय
हां अरे जब इतने बचना वारे पीछरे सुना लेता है
हरे भर गईं जिन्ने पीछरे हां रंगमहल

हां और बांस ललाभी पड़ गई फड़कन लो मूंछ के बारा है
बोरी रम्भिया ऐसी बातें जिन कहिये तुमं कहीं न जाये
हां और जान न पावे धोड़ेवालों गंगा पारा है
घोरे बाले की धोरी है लों रे छिड़ाय
हां और भार भगावों इन घड़ियां में सागर पारा है
बाजे बज गये बदेरा भवन के द्वार है
हो जी...... हरे हां......

हूं.....
और जब इतने बचना और राजा सुन लेवा है
राजा ने इन घड़ियां फाजे बाज करी अयार है
कहिये उन घड़ियां मन माहें बाबे मन में करे विचार
जान न पावे कहिये फाकिन के महाराज
हां भार भगाऊं फाकिन कहिये मैया बौरा है
बाजे बाज बजी फाजें डेढ़ई वे द्वार
हां और मीरा बसुन्धिया ऊधा सौं प्यारे सुनाइयो
और ऊधा की बोलां मैं बरजी थीं बारह रे द्वार
हां और बोले तुमने बात ना मानी मेरी एक बारा है
हरयाने के राजा चढ़ आये डेढ़ई वे द्वार
हां और बारे ऊधा की करीं गूजर ने जा हरयाने गांवा है
जब बारे ऊधा ने मीरा के सुने जवाब
हां और मीरा बतौंदी सां ऊधा फेरह करे जवाबा है
बारे ऊधा बोरे मीरा बसुन्धिया मोखां धीरे कहिये जवाब
हां और देखो राजा कैसे कहिये वे हरयाने गांवा है
बारे ऊधा ने सत्य संवारे सागर पार
हां और गुरुजन वे ऊधा के लगा रहे थे गहरे ध्याना है
राजन के बना दये कुछ ढड़्या वे बोका

हो अरे फाचन की बना दई भेड़-बकरियां
मीता वगुन्निया की दई बेड़िया हाथ
अरे ले चल्ये मीता वगुन्निया वा वन झाड़ी कांगा श है
अरे मीता वगुन्निया चलाइये चली वन झाड़ी रे जाये
अरे देखो समझ्या भज्या या सागर पारा है
जब मारे ऊधा के प्यारे चटन्निया करो मारी पड़े लाचार
मारे झांझ धनी महाराज
हां नट के मरोवो सोखां मुजरा मैं तोपें रोपें सागर पारा हो
मैं ना जानत हीं भरदानी तुम करियो तुम मौखा के माथ
हां अरे मोरी भूलन पे ना करियो जोरा जाले ख्याला है
मोरी मुलिकुं करियो माफ
हां अरेन अरे मोरी फाजें लाद चला के भिजाइये भिल्ला हरियाने गांव को
इतने वचना मारे ऊधा चलहरिया के सुने हैला है
चलहरिया ये मारे सेरा लौट करे जवाब
हां अरे लौट चल वा दें चलहरिया अपने रंगमहला है
मीता वगुन्निया फाजें ले गये वन झाड़ी रे डांग
हां अरे जावे चलत चलये चटन्निया दें अपनी रंगमहला है
मारी चलहरिया ऊधा को फेरत रहे समझाये
हां अरे मारे ऊधा दें जागये थे जुवरे भावाना है
जाये मोरी भूलन पे ना करिये ख्याल
हां अरे ऊधा पी को चलहरिया के जागये मोखा
उठा भभुते ऊधा ने फंकी फाचन की रे ओर
अरे भेड़ बकरियन की उन घड़ियां फाचन बन जाता है
जावें लौट चल के राजा पकरत जाये ऊधा के पांव
हां अरे तावे राजा हाथ जोड़ बिनती कर रहो
अरे राजा मेरी भूलन पे न करिये ख्याल
हां अरे मानत मरोये सोखां मुजरा रोपें सागर पारा है
अरे तुम करियो ऊधा जी दुवरे भावाना है
हो......हरे हां.....

हूं......
ऊधा जी ने हुकुम करे भीखा खां उन घड़ियां लगाथियो
और भीखा खुनिया भौंदारा चढ़ा दिये काथी रे फांफ
हां और थारी मनंखिया फांफन में खा रही दुख वाला हो
थाके घर घर में धोरी दिये बधांय
हां और भीखा रावन के हुकुम के करिये ताबेदार
भीखा खुनिया ने भौंदरा दोई दये चढ़ाय
हां और भीरा धोरी के चढ़ा दये ने काथी फांफा हो
एका मन की ऊधा जी दोई गये मंफराये
हां और रोगा मन ऊपे पहुंचे ने मांफदारा हो
भीखा खुनिया को हुकुम करे लगाथियो
तें धोरी ले चलदे काथी री फांफ
हां ह और हम डेरा डारे मैया जा फाड़ी डांगा के
उतर के ऊधा मुंह धाये बीला बांधे चलत गुरु के पेड़ा
उनने मन मुखी टांगी डरारी रे थाये
हां धोरी को ऊधा फाड़ी पिछाड़ी लगाथियो
और अपन चले गये रे बगियन की ओर
हो और थारे ऊधा करिये है भजिया के गा सोये दुखभ्या नींदा हो
बगियन उधीखा ऊधा पर हैवा हो
ऊधा जी सो गये गहरी नींद
हे और धरनी के ने निकरिये भिखारे नागा के
थारे ऊधा जी को चरन पे रें डंब थायें
हां और बोध न थि थारे उन घरियन मैया लग रहो
हरे डंब के खमा गये नागा धरनी लोका के

हो..... हरे हां.....

हूँ.......

है जब जधा जो उड़ गई सुरलिया की नजरें पड़ जायें

और जब सुरलिया की नज़रें नागा पै पर गईं

और जब सुरलिया सीता खों रही समझाये

सो रे सीता तोरे पछया मोरे पछया उड़ लये धरती बिछाले नागा है

जाके निरमोही मोरी जान गयो सुनाउ की जीव संसार

हां और तोरी आड़ी पिछाड़ी भैया लगाइयो

अब कौन कहिये समझवा रे मन जाये

हां और जाके रे प्यारे मोरे गौवा सुनाइयों

जावे सुरलिया के सीता ने सुने बचाव

हां और री सुरलिया तें आइयें चांचन पे सुनाते सीता है

मोरी आइये आड़ी पिछाड़ी में कुवां बगियन के साथ

हां और जब सुरलिया ने आटी लीं सुनाइ अपनी सीता है

जारे सीता की आटी आड़ी पिछाड़ी सीता कुंदें बगिया के जाउ रे साथ

और उड़ी सुरलिया आसमान खों सरगई में करी अखारा सो

रावन भागे सुरलिया बीच गई और सियाराम

हां और रावन छोड़ी सुखनिंधियां सुरलिया दिन के भोजन परसादा सो

अब एका जब जाती सुरलिया दोई गई रे मंझधार

हां बीच जब सुरलिया पहुंची कहिये झांझन तोरा सो

झांझन के कंगूरन पे बैठी सुरलिया बोले मयावने बोल

सो और जब रखवारी की सुरलिया पे नजरें पर गयो

बोरी सुरलिया तोरां जाके चिरौंजी सुनाईं पिय दुधवा पिवाये मतिवारी रे गाय

हां आज कैसे सुन बरागी सुरलिया तू कर आई तें थेरी सेवा है

भैया छोड़े दैबे सुखमन बेरी और

अरे ये देखूं बराबै मुरलिया बोलां तेरी कीरत मधे गाता हो
थाके मन मुरलिया मोरी को फेरई कर जवाब
हां अरे बांगर मारे घर अरे थेन बटरा कर दये बाथक बिनाशा है
थावें पेड़ पहूं ऊधा भी उखाड़ै फांक
हां अरे बछिया मर्ई छाड़ीं रावन की ओर न ढंढारा है
थारे कन्हैया बरियाने सोई पीवे पलंग फेर
अरे मोरा हुता है ये थन ज्ञ थे बावी फांफा हो
मांझेधार में छुरना ने डेरा दये डार
है मछिले के को चन्दीवे हो गये सुखम्भियां रे गींद
है अरे मोरे ला गये थे निरमोही सुनाटी कीला
तावें तोता की कााड़ी पिछाड़ी घई री काथे
हां आज सबरंग बधरीआ कौन बन जाती हारा फांका हों
तावें मैं पिंजरन की काटी सुनाहू सीख
है अरे तावे तोता की कााड़ी पिछाड़ी थोरी काटि हो
तोता ने छूटे थनियां के थारूं साथ
हां अरे मैं मागत थाई बचिन सुन तुम्हारा धारा है
हां पांय टूट गई थेरी देखा
भैया बचन के गुवरा हो रहे भवन के दोरा है
हो री मुरलिया भैया हो रये गवरी गींद संवार
हां अरे को थागये को थाको थेरी होता हो
थब बचन लाड़ली के मन ऊधा ने सुने जवाक
हां थोरी काज भवानी थारी कमलापत सां रे लइये खन्या गोदा है
थोरी थेना रं डाढ़ी हो पहये संनन की चोट
अरे थारी कमलापत सां छोड़िये पलकन के मांझा हो

थांरे कमलापत की किलकारन में जागे जारख जी महाराज
हां वाके भैयन के प्यारे बच्छिन की जब सुनाड़ियो
थारी कमलापत वां मदन की मे ले ले कैयां गोद
वो और थारी थेना ठाढ़ी हो गई चंदन की ओटा पो
थारी कमलापत वां जारख की पलकन दये छोड़
और थारी कमलापत मार-मार किलकारी जब जा उठे थे
जारख जी महाराज हो
जब जारख महाराज की जा पड़ी सुवभियां नींद
नींद सुलतव सुरब गये पलका के बारह पांव
हां और थारे सुरभा को पड़ गयो बाड़ पे पलोने हाथ हो
पे मोड़े चिड़िया तू मर जाती तें पें पड़ती मक्खयां रे गाज
हां रैंन थारी मनिजिया वां फेर कैसे छोड़ी पलकन की ओरा हो
आज ते खेल मर जाते जा में कौन मानती बचन मानिजा
बचन ताड़ली थारे जारख कन्हैया को उपर फेरियो
मैया आज पांय टूट गयी तुमोरी मेरा देख
और सुरपाल दादा को दंड लयो धरनी के पनभिया नागा पे
ताके लौटन बिचारे मैया लग रये
जारख जी दादा मन मांहि बांधियो
दादा जी मनाई में करे रे बिचार
हां और बन मुरलिया वां थारे वत ऊधा समझाड़ियो
वो री मुरलिया तें कन्हां जिया चलिये मेरी देख
हां हम देखें कैसे धरनी के बिचारे नागा पे
जब ऊधा के मुरलिया करे बचना रे सुन लेत
पे और बन मुरलिया थारे ऊधा को उपर फेरियो
में पंछी कथिये ऊधा बन भाड़ी रे पाय ॥

हां अरे तुम कहिये मारी मानुष के बजरिया हो
कौनऊ विधि से तोम्हां ले जावों मेरी देस
अरे जब मुरलिया ने ऊधा के वचन ये सुनो
ऊधा जी बन मुरलिया हो रहे समझाये
भैया के लाने मुरलिया पड़े से हलके हो जायें
हां अरे बन जावो मैं मुरलिया गेंदा क्यारी फूला हो
तोरे पखउवन में मुरलिया जाऊं समाय
हां अरे लिया चलिये मुरलिया तैं मेरी देवा हों
भैया के लाने जाख जी मडुले में छोटे हो जायें
हां अरे उन घरियां में बन गये गेंदा क्यारी फूला है
अरे कन्हैया मुरलिया के पंखन रहे समाये
हां रतन भंडारे उन घड़ियन मुरलिया काढ़ लिखो
बन मुरलिया उरगन में करन लगी रे बजार
हां सबा बन पाली मुरलिया दौर्ड़ गई मंझवाये हो
देख बन कहिये बाबू कनफटुवन के पड़ गये देख संभार
हां अरे बन मुरलिया मेरी कनफड़िया काढ़ डारिहो
बन मुरलिया ऊधा की फेरउ और जवाब
बारे ऊधा जी झाम्डू पड़ गये कहिये कनफटुवा के देवा है
ताके गलियां तोड़ी मेरी रे धर जायें
हां अरे भिरवन मुरलिया के बचना ऊधा सुना लेता है
ऊधा जी मुरलिया हों रहे समझाये
हां अरे सीधी चलिये मुरलिया ये कनफटियन के देवा हों
बन मुरलिया सूंधे पकड़ गई वा कनफटियन की जोरा हो
कनफटियन की नजरें मारी मुरलिया पे पड़ जायं
अरे कनफटियन मन मसोसे बांधे मनक में करें रे बिचार
हां अरे बनव्याई सिंगारे मेरे भैया बागई हमारे द्वारा हो
बारे ऊधा जी पांच बरस के बालक से बन जायें

हां अरे जब कनफरिया ऊधा के राखन लगे सम्मान हो
जब ऊधा को कनफरिया विष के प्याले रहे पिलाय
हां कनफरियन कौं थारे ऊधा फेरत करे बचावा हो
विष की डलियां विषई की पोलियां विष के लगे रे दवा
हां अरे विष के पेल्या मोरि रथ पल भोलानाथा को
तावे कनफरिया हरो चलियो हमारे संगह साथ
मैं तुम्हारी देखूं कैसे जादू के अवतारा है
मोरे पेयन के अंब लये रे फणिया के नाग
जावे चलियो मेरा संगह साथा रे

हो..... अरे हां.....

हूं......
जब कनफरियन ने अपनी बीने ले ली संगे साथा है
उगरत जावें ऊधा के संगह साथ
एका वन जावे थारे कन्ह्या चोर्ह गये मंकताये
थारे कुरमा वीच वन पहुंचे थे थारे भक्तिदार
थारे कुरपाल दादा को रहे थे सुखनियां नींद
थारे ऊधा जी ने धर लये थे मनुष के शरीर
हुकुम करे ऊधा जी कनफरियन कौं दये लाय
कौरे कनफरियां करे अपनी अपनी बीनें पत्यो रे बजाय
हां निकारियो ए धरनी के वे बिचारे नागा है
तावे रनधीरी ने चौले चारु फेर
कनफरियां अपनी अपनी बीने रहे बजाया है
तावे बजावत बजावत बीनन के टूट गये तार
कौसे ना निकले या धरनी के बिचाले नाग हो
थारे ऊधा ने छोड़ी हुकुमा देख की कनफरियन कौं ऐसी दुहेली रे मार

हां कनफरियन की कोरी फंडा ऊधा छिड़ाव्यौ
कनफरियन सौं ऊधा मे मार मगाये मंझिधार
हां अरे आरख कन्हैया मे मन मतौदे उन घरियां बांध्यौ
थारे ऊधा की मनव मैं करइ रैं विचार
हां अरे जब मैया के ताने थोटे धरने बरीरा है
मैया के ताने ढंसने पड़े रे धरनी रे पाताल
हां रे अरे थारे कन्हैया ने धर लये थे भारी माजुक बरीरा हो
वे धंस गये धरनी के पाताल
हां अरे नागा जी सो रहे थे वे सुखनियां नींदा है
नागनिया नागा जी की पंखा डोरे बारम्बार
हां अरे आरख कन्हैया थारी नागनिया उपर बोलिदो
बोरी नागनियां तें अपने नागा सौं दिये जगाय
हां केवीं सो रहे नागा जी सुखनियां नींदां है
जब नागनिया बोलन लगी करख करे जवाब
हां थारे कन्हैया केवीं तें आगयो भैख रंगमहला हो
मेरो नागा उंव के सो गये सुखनियां नैंव
बोरी सूरव मूरत की सी बोरो मैया कहिये उन बार हो
अरे लौट चवल जा थारे तें अपने धरम दुवार
हां कोले बरजी नई मानि ऊधा कराया एकइ बार
या कारख उमका रही सो सो बार
हां ऊधा की नागनिया की नई माने एकइ बाता है
बोरी नागनिया अपने नागे दिये जगाय
हां अरे बार बार बरजी नइ मानों थारे मैं मदन के डोरा हो
थारे सूरमा मेरे नागा सौं देवी दिये जगाय
अरे मौरे जाये मैया नागा जिन जागियौं
हो......, अरे हां

हूं......

वरे नागिया ऊधा कौं रही समझाये
यारे ऊधा धी मोरे नागा कां तुमही लिये जाय
हां वरे ऊधा ने वस्त्र संवारे व उतारे गुरुजन के नाम
नागा धी की ऊधा धी पूंछे रहे बात
धर कुचकारें नागा धी रे ऊधा धी की ओर
गोरे के कन्हैया आरे पड़ जायें
हां वरे म्हारे ऊधा धी के फ्लटे कारख मे नागा हो
यारे ऊधा नागा के साथे रह गये दांव
हां ऊधा धी नागा कौं समझाये रहे व धरनी पाताल कौं
का कारन वे ऊधा धी मेरे मैया की ढंव लये बांधी के पाव
हां वरे मेरा मैया कौं नागा धी दिये जिलाये दौ
नईं तर नागा धी फार के बीछ कर दौं बीछ वे कर देवं चार
हां वरे हाथ जोड़ नागिया ऊधा बिनती कर रहो
यारे सुरमा मोरी सुड़िवन के कर लिये ख्याल
यारे भानव बाम के बारां नागा ढंव बाथी धरनी लोका वे
नागा नईं जानत तें के कब कर्म वे ते अवतार
हां वरे नागा धी बिनती कर रहे वे धरनी पाताल वे
वरे पांचा हरा रये दीनन के दयार
वरे पीतव की पीतनारी हां नागा जिन बोलियों
पे धटिया पे नईं करिये नागा रे बिनाय
हां देहरी नागा ना मांधिये नागा धी येठी करिये ख्याला वे
यारे नागाधी घर लांका न डारिये बरबाद
हां धां बार बाबा नागा धी मेरी धारिये मथुरा वे
निकर के मेरे नागा जायें वें धरनी लोका का
मेरे बीरन कौं दिये जिवाय
हां भीतर वे नागा आगये वें धरनी लोका के
मेरे नागा धी ऊधा कौ रहे समझाय

हां दोष के नांचे मेरे ऊधा मराथ्यो
जब ऊधा ने दूध की मूंदें घर दई मराये
हां नागा की ऊधा के तखत में लग रही
तखत पे फिर फनीके बीनन के बार
हां फिर फनिक के नागा की गांदन में उन घरियां छोरिदौ
जब फनिंक के उठ जागे कन्हैया नन्दलाल
हां अरे सूरपाल दादा थ्यारे सुना रये बांसी पारा पे
मेरे मन मुरलिया में वो गया गहरी नींद बंमार
हां वाके का कारन पे लोंखन के मारे फिमारे लग रहो
वाके थ्यारे मुरलिया लिये सुनाय
हां जब मुरलिया मारे ऊधा की फरख करे बजाव पे
सूरपाल दादा तुम्हां डंक लग्यौ वो धरनी पे चारे नाग
वाके लोंखन के मारे फिमारे बाचा पड़ रहो
हो...... अरे हां

हूं......
लोखन फिमारे सुरमा के लग रहो
जब मुरलिया ऊधा की फरखें करे बजाय
हां सूरपाल दादा ने लौटक के रहे समझाय
हां आरत कन्हैया का कारन पे मारे घर गयो
वाके थ्यारे मोर्वे वां लिये सुनाय
मोरे मन कन्हैये उन घड़ियां सोवत पे
आरत कन्हैया दादा धों रहे समझाये
हां उगरत चलिये दादा मेरे अपने उतन पे सुमा के
पे साथ बैरी हमारे पूरे हो जायें
हां वाके घर घर धौरी बंधना दई कावी मांका पे

हाँ सुरपाल बाबा रमधौरी पै बजावें दुहेली रागा है
लगत बाजै भैया भाँभिन की घोर
एका बन चाले सुरमा दोई गये मँझराये हो
बारे तीज बन पहुँचे सुरमा भाँभिधार
हाँ धन्य घरी महाराज की और धन्य परन के भागा है
जिन घरियन के दोई सुरमा पहुँचे भाँभिधार
हाँ भीखा सगुनियाँ हाँ ऊधा उचर और बताया है
हैं बारे ककौंदी बन का सबरौवा टौड़ा रे भाँभ
हाँ बैन लाड़ली हाँ बारे ऊधा समझायो
है महिने हैं हमने मिलत गये बैरी रखवान
हाँ है महिना ये बैना हरे कटौवा भाँभा हो
तावें बन या सबरौवा बैरी बैना है
हो..... हरे हाँ......

हूँ......
दोई सुरमा ठाड़े भाँभिधारा है
भीखा सगुनिया हाँ ब्यौरे रहे सुनाय
और कहये भीखा सगुनिया तें टौड़ा भाँभा है
भौरी का ललकर सुवाया दिये कराय
हाँ और भेंट कर लैवे बैन सू किया किलोरा हो
भीखा सगुनिया कहिये राजन के हुकुम के ताबेदार
हाँ और इतने कहना बारे भीखा सुना लेवा हो
बारे भीखा सूधे पकड़ गये साथी रे भाँभ
हाँ एका बन चाले भीखा पे दोई गये मँझराये हो
लेवा बन पहुँचे महल के दुवार
हाँ और बैन की नजरें उन भीखा पे पड़ जाता है
बहिन लाड़ली भीखा हाँ रई है समझाय

जरे भीखा चलौंदी कैवी सुन हरामी करी तैंन थारी देवा के
जोरे भीखा जोरें चल मरोवां बीरन की थोर्पा मांझधार
हां जरे कैयों टीव कोवी बागयो भीखा हमारे डोरा पे
जोरे भीखा तोपै परे मलइया रे गाव
हां जोरे भीखा की चिवत मनाया पे
बान कारन पे बोड़ूं तैंन रे बीरा थारी पेव
पे जरे चाके ज्यौरे बारे सुनिया मोवीं जुनाइयो
हाथ जोड़ बिनती करे बैन की भारी पड़े रे लाचार
थारे कन्हैया चांगर मारे उन पत्थियां पर्वां फेरा पे
गौंद की भारी पटभिया हर सांकव नारे चाये
जरे हरे जोरी का कहिये सुना हारा जी
चांदिया मन थोड़ी रावन की जोर मन मेला
थारे सुरमा ने जोड़ें हरियानी चीती पर्तों फेरा जो
जोड़ें के जोड़ें क्या ठाड़े मांझधार
हां तुमारे तमर बुलोवा क्या चोरी कराड्यो
बैन सु तुम चलो हमारे संगढ साथ
हां जरे जब बाई राजा ने भारी बुलोवा दिवाड्यो
बाई राजा ने वडियां जोरी बावड रे जाव
हां जरे रभिंगा की बैन सु लगा रहें संगी पीरा जी
बेटी राजा ने मानव जोड़ें रहे उज्याय
हां जोरा पे वडियां बैन के होगयें संगयें साथा जी
लगरव जायें चिटियां जोवरे गायें भेवन पे लगा रहें सुरे ध्यान
हां चाव भेटें करीं बीरन कां किया छिजोरा के
एका मन बाती वडियां जोड़ें गयें रे मंभवाये
हां जब वडियां तीव मन पहुंची पे मांझधारा जो
जोड़ें सुरमन की बैनन पे नजरें पड़ जाये

हाँ भीखा जबौंदी हाँ बारे सूरमा उधर देखियो
और भीखा का कारन ले दैने बखियन खें मोरी मातउ रे जाव
मोरी गांठिन नथ्यां भइया पै धनेरे दामा है
साथ कीनी विधि है बखियन के राखौं रे सन्मान
हाँ राखे भागत भा बखियां बदला दै अपने धरम के दोरा हो
ढील कौसे सेना आये हमारे पास
हाँ ऐसे सेना भेंट कर लैव हमने लिया लिवौरे को
भीखा जबौंदी कहिये राजन के हुकुम के आमेदार
हाँ और भागत आये भीखन जिनके शरन लौं न पावां हो
हाथ जोड़ बखियन ने भीखा विनती करे भारी पड़े रे लाचार
हाँ सबरी बखियां लौट मगल भयो अपने धरम के दीजारा हो
ढील कौनी सेना एकतादी आये हमारे पास
हाँ ठाढ़ी बखियां मन भावें वे बारे मंझधारा हो
वे बखियां मनक में करवे विचार
हाँ साज पानी के पतरे कर दये मैयन ने हमारे सनमान हो
तातें मड बदले भैया मंझधारा है

हो...... हरे हाँ.....

हूं.........
हे सखियां ठाढ़ी मंझधारा है
भारी सेना बखियन को रहें है रे समझाय
हाँ लौटे सेना सदी लौट मगल भयो तुम अपने दुवारा हो
मैं राखौं सेना तुम्हारे सनमान
हाँ वैन भइया की भक्षा हो सेना गाढ़ी सोता है
मोरे बीरन है भविता पै. को गये पैरी देख
तातें मैं भेंट कर आऊं बीरन खों मंझधारा है

तावैं सखियन गईं माने बैन जी की सबब रे बात
हां सबरी सखियन चलत जा रहैं मैयन की खोरा है
वोरै बीरन का कारन है हमारे पलटाये मान गुमान
हां वाके ब्यारे बारे कन्हैया मोखां सुनाखियो
बारे कन्हैया चोरी की उधर करै बवाव
हां हमारी गांठन मख्यां धनेरे दामा है
तावैं जिनके राखी रे मान गुमान
हां तावे गुमखा चलतो रवी धरम के चौबारा हो
तावैं सबरी सखियां आ गईं हमारे पास
हां ऊधा ने सत्य संवारे गुल्यन पे लगाये ब्याना है
बारे ऊधा बाव की लज्जा राखिये बारम्बार
हां ब्याधारी ने कंचन बरखा दये मांझिधारा है
हां मारे मीठा मधुनिया मर मर बोली राखे सनमाना हो
बारे ऊधा ने सखियन के राखे सनमान
हू दोई भैया हाथ जोड़ सखियन से सबनती मैं करीं
वोरी बैन लाड़ली वरी तुम चलत भयी धरम के दुवार
हां बैन लाड़ली ठाढ़ी राखे या हमारे मावा है
हां अब चलत जा रहैं चिठियां अपने भवन के चौबारा हो
बीत बोली बैना ठाढ़ी या मांझिधारा शै
बैन जू बारत उवारे वीर गुल्यन के उझारे मामा हो
बैटी रावन मेंटन वां पीढ़ी किया विचार
हां बारे कन्हैया चोरी की वे उधर करै बवाबा हो
बारी बैना मेंटें जिन अरिये हम पै बढ़े भारी रे अपराध
हां धरे चिलकत डौड़े लरैया वे बांगर देखा हो
वोरी बैन जू हमपै चढ़े उनके अपराध
तावैं हमारी लग रहीं मन में हिमालय पारा है
हो हरे...... हां

हूं.....
बैन भैया के झुमरा हो रहो
बैन के झुमरा हो रहे री मांझिहार
तावें बेटी राजा को ऊधा रहे समझाये
हमारी लग रही मद्ध में छिमाला पारा है
तावें दोनों रमाऊं छिमारे पार
अरे बेटी ने ऊधा के बचना सुन ले घर के ध्याना हो
बेटी राजा धीरज धाँ रहे है रे समझाये
हां अरे बरसी मान या बारे भैया के मन्दलाला हो
तोरो लाने बारा बरस हारे ले पढ़वत ये सवराव
तोरे लाने मैंने पोगी टारी दिन हो राजा वे
भोला जी पे फुलना चढ़ावे बहुरे बाव
हां अरे जब बरदानन में कये भोला भोलानाथ जी
जनम जनम का छाड़ें मौंखा कये लगा
हां चारों करके धनेरा ले धामें कर जाता हो
जिनके भैयन भैयन कैव केव टेरऊं गहरी रे आवाज़
हां आव तावें बरसी मान या बारे भवन के दौवारा हो
जावें बारे सुरमा भैरे बचनन के करिये ख्याल
हां अरे तोरे पढ़ावें मैंने उलमांचर छौड़े गा करते जाता हा
तोरे पढ़ावें काम छिड़ौरे बहुरे बाम
हां अरे आड़ा महिना सावन के भैरे बान छतेल रा डाब जात है
आड़ा के नीचे सावन के लग जावें
हां उन धनन्द बमरया भौरे सुरमा सुरब देवा को
जावे भैयो बरसन दे रे मूसराधार
हां अरे मर दे जला पुखरिया बारे सुरमा गंगोला वाला हो
घर बैठे छिमालो दीजिये दीमन के ख्याल
हां अरे जब इतना बचना बारे कन्हैया बैन के सुन लेता है

चैठ मास की परे चतुरी घरे घाम धूप भारा
रीत धावैं तला पुखरिया धन छु धुवैं रे गंगोला बे ताल
हां छिमारों थें कथिये थैना मैन लौरे डाभरो
धार्में धन की धीपे रे कोढ़ी बे बयोग
हां बथये छिमारों थैन छु उघरा कौन को
बेटी राजा थिन थिंगुरी के धौरत की कोचां बे गर धाये
बेई छिमारे धीर्यां बेटी राजा बरोबर धारा को
हो.......... धरे हां

हूं.......
बेटी राजा ब्यौरे घुना रई घुरमाला धौं
धारे धुरमा भैरे घुन लिये बधाय
हां धरे उठ के थिरकावैं घर धाये ना मेरे ना उधर देखा धौं
छिमारें के थिन थिन के मवया लोट धवर के धागये भवन के दोवार
हां धाथे धरथी धान था धारे भवन के दोधारा बे
बेटी राजा धारे धीरन धौं रई बे री धमकाये
धारे कन्हैया तैं भुगत लिये का करो राग
धौरे भवते मैं दीर्यां छिमाता उधर कोन को
धारे कन्हैया धन के मचना रे घुन रेत
बे धरे धारे कन्हैया मोरी धौं धमका रथे धाँ-धौं धारा दो
गवन गवन धेवरा धौर्वे धन छु धुम्बा धने रे धाम
भैया के भवते धन छु बीथी छिमाता उधरा कोन को
ताथे बेटी राजा मोरी लगी महु मैं छिमाते धार
बेटी राजा धारे ऊधा धौं उधर देखिये
धरे निरमोही कमलापति काये धां छिला लाये मवयां रे गोद
काथे के लाने कमलापत धर लये लाड़ के नाभा बे
मैंने धारी कमलापत के रचां धलोने काज
हां धाज काज के कमरिया ना धीये भैया धरनी लोका दो
धारे धुरमा हरदी की लगइया न धीये मंडवन के मांफ

हां धरती में मोये बैठी कमलापति दोई हाथ हो
अरे लौवां अधरमी दीरो किमारा है उपराकोन
हां वाके धरती मान वा मइया के नन्दलाल हौं
हो...... हरे हां......

हूं.......
बेन मइया के मुनरा हो रये मांझधारा हो
या दिन बेन की कमलापत के रये सलोने काज
हां जा दिन न्यौते भेजिये बेन जू निबुरिया पेड़ा हौं
जा दिन में मामा सवांरो बेन जू सलोने काज
हां औसे धरती मई मार्ना रे पांगर पेच
बेन मइया की ममता न छूटे मांझधार
बारे कन्हैया बेन हों रये समझाये
हां बेन जू प्यावन के मारे बौंठन पपटा पड़ गयो
बांख के भर भरन की तमीर
ताके पनिया भर ले आइये दीवे पारा हौं
बेटी राजा दीवा की कमलापत की पकड़ा दई दहेली बांग
हां बेटी राजा कमलापत हों फेरब करे पयाय
हां वां बटी भारी कमलापत दीवा की मा छाड़िये रखवार
हां मच्छर मामा ढलकिया कर देवे मांझधारा हों
हां बेटी राजा ने उगरत वा रये रे दीवे पार
हां एका बन मसकै पाली बेटी राजा पौंच गयी मंझधाया हो
रैया बन पहुंच गई दे रे दीवे दवार
हां वां दीवे में बेटी राजा मल मल करें असनान कौं
पेले लौटा ढारें बेन जू ने सूरज नारान कौं
दूजा लौटा ढारें बाला जी रे महाराज
हां तीजे लौटा बेन जू ने ढारे भोला जी के मामा कौं

धोपे लोटा भर लये भर लये गदेलन के मांझ
उगरत जावें लाड़ली भा छीते डोरा खों
छीतें की बातें छीतें रह गयीं आगुं के सुनिये बयान
बारे धुरसा बारी मनेछिया खों उपर फेरे बबाबा खौ
डोरी मनेछियां ऐंठा भर गये टंगे थे घोड़ा के घोड़सार
हां लाई बिटिया मागत फरयें तें धरम के दौवारा खौ
अब इतने बचना मामा जी के बेटी सुन लेव
छोरें मामा झूठीं बातें बिन करिहें तें मांझेवारा खों
ऐंठे टंगे थे लीला की बाखिर री किवार
हां इतने भा कहीं धरनी गाड़ खां छोरिछो
अरे ऐंठन के बन गये थे बिचारे नाग
डर के मारे कमलापत ने छोड़ी लीला की हवेली बांगा खौं
बढ़ा दये भंवरा लंगुरी बाबा के

हो......... हरे हां.........

हूं........
अरे बेटी उगरत जावे छीतें मार
ऊंचे अटारा चढ़ बैन जी हेरा चारउ ओर
हो ना बैन खां लीला दीखे ना लीला के असवार खौं
दीन होती कमलापत बिलखे मांझेवार
अरे बैन ने ठाड़े लोटा पटकें धरनन मारें बिलापा खौं
अरे बिधाता भा कैसे मन भा रचीं दीनन के ख्याल
आज बलबलिया कर गये मोखां मांझेवारा हैं
डोरी बिटिया तें मर जाती तें प परती मड़या रे गाज
तोरे नांव की मैं होती जनम खां बांझा है
लेन गये लीला की छोड़ी हवेली रे बांग
हां जाके ब्यारे बिटिया मोखां सुनाछियो
बेटी कमलापत डोरी खों रुंधे रे री समझाये

हां अरे रैठा के मावा की बना दये खिलारे मागा की
डर के मारे सीता की छुटी सहेली री सांग
हां मामा ने चढ़ा दये महरा संगुरी चाला की
घेटी मे बारे कमलापत हां है है अबन्धा गीप
डारव जावे घेटी चढ़ वन फाड़ी डांगा वे
रोवत व जावे चिड़िया डीमरे और
हो अरे घेटी एका वन चाली अरे दोई गये मंकदाये की
तेजा वन पहुंची घेन छु निवरिया के पाव
हो री निवरिया तै पाठं पं बनीं पी पी पी काना वे
वो री निवरिया वोवां सीता वे धर जाये ववारी भौं तैं
मैंव वोवा मनिवारे के बिमावे निछुरिया छुधा वे
वाच तैंने मझ्या चढ़ा दये अपनी रे और
दे दों वरापं निछुरिया तै हो जावे पतउवा मारा वों
बारी निछुरिया पोरी हां उचर फैरिहो
वेरपक के लाने मरन गवां रई घेन छु फाड़ी रे डांग
मैया दोव के दोई बरी गये किमारे पारा वों
लौट चल जा घेना घर माना के बीरा के
हो....... अरे हां

हूं........
घेटी राजा गवयां के गढ वन फाड़ी डांगा वों
एका वन चाली घेटी राजा दोई गई मंकदाये
तेजा वन पहुंची घेन छु छुनाखियो
वोरी पदरिया वोवां किमधी देव कौं रे वराप
तैंने मोरे मझ्या छिपा दये अपनी वोट
हो अरे दे देऊं वरापे पदरिया बह जावे जैसे नीर की धारा वों
वोरी पदरिया मे घेन के जिगपढ़ सुने जवाब

हां सुन पछरिया लौट चदल के घोरी को उधर देख्यिो
वे ठाढ़ी हो पछये धैन सु मौवरा की ओर
वोरे सामने में मछ पात झुं नीर की धार वों
अपने भैया डारिये धैन सु नवर निहार
हां एक बरापन में ठाढ़ी विदुरों # वा मांझघारा को
धैन वाढ़ल सुधि बरापन में मौरी क्या गत हो जाये
हां मछया वोरें चंदन की धी चौड़ी चली गयी दिमारे पार वों
पिरथ के वाने घेटी भरम गवां रहें हमारी रे मने ओर
लौट चदल आते घेटी वें अपने हरियल टौड़ा झांझा वों
घेटी की बाबा की निरावन रे हो जाय
अरे रोवन लगी घेठ- घेटी उन चरियां डीमरे डोरा हों
अरे तब पंछी का धैन के लागये मोच
लौट चदल आई घेटी तब अपने बाबी झांझ वों
एका बन खड़ी घेटी राजा दोड गई मंझराये
जब घेटी देखा बन मढुंल पहुंची रे हरियल टौड़ा झांझ
जब झांझ के मछया की नजरें धैन पे पर जाता हो
आरे की अभागन चिटिया उगरत आवे हमारे दुवार
हां अरे जनमन आ लये हंने मताई बाप उनमुख भैया निगार आई दिमारे
झांझ के हुकुम ने लगा लये चदड़ के किवाड़
डोरन डोरन चिटिया चिलका फिरे टेरत जावें गेहरी जाजा को
घेटी हां उधर मड देखें हरियल झांझ
हां झांझ में धैना पानी की पतरी हो गयी टोड़ा झांझ को
धैन की खोज देत ना सुहि आव
हां घेटी राजा उगरत जाये खें भेखुल के मौवारा वों
भेखुल की धैन पे नजीरें पड़ जायें
हां धैन के भेखुल ने राखे वें पूरे जनमाना को
आरे मेघल घोरी वों फेरत करे जवाब
हां अरे जा दिन वें भारी कम्लापत के रचे धलोंने जाजा की ..

या दिन न्योतउ धोरी मोला पिये लगाय
हां या दिन सवांरो तेरी भनेष्यिा के ब छलौने काजा कौं
इतने बचना मेघल के धोरी रे सुन लेल
यारे ऊधा पी चलो गये सिमारे पार
एका मन चलो कन्हैया दौई गये मंभावाये
हां वरे वीच मन पाई कन्हैया या सिमारे पारा को सुरमा
सुरमा ऊपर के लीला पेंवे मुड़ं बाये लीला टांगी रे बरद की छांव
यारे सुरमा ने लीला दोई बांधें बाछ गुरू के पेड़ा के
मन मुरलिया टांगी कन्हैया ने बरारी डांग
हां वरे खाली घटोरी सुरमा ने थान करारी डांग कौं
वरे जिनने पंचवटिया बाच करी वें री तेयार
हां वरे येला ठाये दे सिमारे पारा कौं
जिनने लगा लइ लांटी मुंख की अंग चढ़ा लइ रे भभोत
हो वरे तपिया बन पेठ सुरमा सिमारें पारा कौं
यारे कन्हैया ने तुलसी की माला ले लई अपने हाथ
हां माला फेरे सुरमा ले ले गुरुजन के नामा के हो
पैली माला के फेरतइ सब्द उंबारे रे मजारी रे बस्त बाप
हां दूजी माला के फेरतइं रे-सिमारे मैया गुरू भोला के बखाने नामा हो
तीजी माला के फेरतइं रे सिमारे में लगी धमाल
हां हाथ जोड़ सिमारे तपियन से बिनती ये करीं
हां कोन से तपियां तुमारे बावन भये कोन देस सों आय
हां वरे का कारन से तुमने धोनीं रमा लइ मोरी पारा हो
तुमारे तप के मारे मेरे जीव जंतुर मरे जायें
हरे वरे ऐसी माला जिन फेरिये तपिया मोरी ब पारा के
यारे सुरमा ने सिमारे के दिरघन सुने जवाब
तपिया हां समझा वरे हंई रये वरे सिमारे पारा सों
पूरब दिसा से हमारे आउन भये आये तुम्हारी ओर

हरे हरे चमका जी उमें भारी पड़े अराधा हो
जाके पानीं टारी रे तोरी पार
हां हाथ जोड़ के चमका तपिया से बिनती ये करी
हो....... हरे हां

हूं.....
चमका जी तपियां सों करे जवाब
ऐसी माला बिन कन्हई कोरिये हमारी पार
हां अरे हंसा छोड़ी जोड़ियां चमका छोड़ दिये निराधारा हो
हंसा उड़े गगन करे बिसराम
हां सुधे पकड़ गये ये जोड़ा फांक जो
बेटी राजा बैठी थीं छाजन की ओर
अरे हंसन से ब्यौरवारी बैना बोलियो
क्यों हंसा तुमारे देसा सूखन पड़ के पड़े बज्जरी रे काल
अरे तुमने कैसी छोड़ी मय्या मोती मोरा हो
इतने बचना बारे हंसा मोरी हां सुनाखियो
उन घड़ियां हंसा मोरी जो रये समझाय
ना बैन जु हमारे देसन सूखा पर पर्यो
ना बैन जु परे बज्जरी रे काल
हां दो तपियां बैन जु बैठे ये किनारे पारा हो
उनके तप के मारे किनारे में लगी है रे दमार
हां अरे तप के मारे कढ़िये हमारी छूट गयी मोती फुवारा है
तातें बैन जु भागत आये तुम्हारे देस
बैन लाड़ली हां भय्यन की सुध आ गई छूट की ओरा हो
बेटा राजा हां आगये पूरे बिसवास
कये मोरे भय्या थांनी रमाये किनारे पारा हो

धौरे छंवा मोखां लिया चढ़िये किमारे पार
हां अरे मैं दरसन कर लां तपियन के शरीर पारा हो
फेर कमल के छंवा धन धे ओरे बनाया है
थोरी धन छु धन पंछी कहिये बन झाड़ी के डांग
हां तुम कहिये मानुष के ऊपर भारी शरीरा है
मैं ऐसे मिटा दो तपिया किमारे पार
हां अरे धन लाड़ली छंदन लां लाट कमल के परबोधियो
तपियन के लाने छंवा धन बैठों छोटी शरीर
के तुमारे पखोउन में दें छंवाबनाधियो
ऐसे मेटा दो तपिया किमारे पार
हां अरे मैनन के लाने बेटी राजा धन गयी गंगा क्वारी फूला के है
लाट कमल के छंवा करे आवें किमारे पारा लों
बेटी राजा सौवें कलश आवें रे छंदन के संगई साथ
हां इसी भावें बतई और बानु के तुम लिये बनाया हो
समधा जी ने तपियन के तीन दिन के धरा दये काम करार
छोरे तपिया ख तीन दिन माला जिन फेरिहे मोरी पारा है
भागे समधा पहुंचे हरी के दरबार
हां हाथ जोड़ समधा हरी से बिनती के करो
मोरे स्वामी देव तपिया धन बैठे मोरी रे पार
हां अरे तुम उन तपयन के मारे मोरी छूट गयी मेघमाला हो
तावें तत्पर बुलउवा करा लियो आ हर दरबार
हां अरे मारे सूरमा के लाने दें आगये ते आसमान से बिमाना है
छोरे तपियां बैठो बिमानन के मंझार
हां अरे तुमारे बुलउवा हो रये ये हरी के दरबारा लों
सोब तपियां बैठे दें बिमानन के मांझा हो
भीखा बगुनिया कों मारे कन्हैया समझाधियो
ओरे भीखा तें धोनी टारल रये किमारे पार

हाँ पी तक हमारे बुलउवा हो रहे थे हरी के दरबारा कौं
मीरा बबाँदी हाथ जोड़ बिनती करे के मारी पड़े रे लाचार
थारे थारे ऊधा में हलके थे रवाँ वाँ तुमारे संगह साथा हो
हम रतह तुमारी रनवारी की टारी वीं सीद बवांर
हां बारी चली गयी सुकेदी आ गयी मेरे शरीरा को
तुमारे संगह मैं देख आऊं स्वामी हरी के दरबार
थरे मरैव मीरां बिन छोड़ियो तम्बिया हिमारे पारा है
थारे तम्बियन ने बिठार मीरा के बिमानन रे मांभ
हां थरे तम्बियन के कर तबने हो रहे थे हरी के दरबारा हो
जब पेन ताड़वी बबलत थाने थ संतन के संगई साथा हो
भैया कर कर के पेन छू टेरे गेरी रे बाबाय
भैया ना दीवे पेन का हिमारे पारा है
बेटी राजा रोवन लगी डीमरे ढोंर
थरे भक्तन की बाबा में भागत बाई मैं बन फाड़ी डांगा को
कोसे भइया चले गये हरी दरबार
हां बाबा की मारी बिटियन निरावन अब हो जाता हो
तावे निरावन बिटिया अब रोंधा है
हो........ परे हां........

हूं........
है बाबा के मारे भागन बाई पोरी हिमारे पार
हिमारे में बिटिया निरावन रे ही जायें
हां हाथ जोड़ बिनती संतन से बेटी अब कर रही
औरे संता मोरे कहिये भारी है रे अभाग
तावें मेचन से भेंट नब मब पीं हिमारे पारा वाँ
तावें मेरे संता बदला दिये रे कासी रे मांभ
बेरथई के लाने भरम गवांई मैंने हिमारे न पारा कौं

जाके धन सू बन गयी गेंदा के क्यारी रे फूल
और कंचन के पंखन घेटी सब समाधियो
ताके रुखा धन जाके कंवा दोई गये मंकवाय
हां और तीज बन कंचन जब उन घरियां पहुंचे टोड़ा वाधी फांफा को
और घेटी कौं उवारें दरवाजा ओर तें
हो........ और हां........

हूं......
और घेटी राजा उतरत जाये अपने रंगह महला हौं
खोट बदल गये कंवा अपने मोती के फवार
हां दोई भैया खेलन चौपर हरी के साथा हो
खेलत खेलत उन सा जीत गयी बारा रे वाव
हां इते फांकन में बारी राजा ने रचे बत्तीसे काजा हो
बारी कलापत को रच दये बत्तीसे काज
हां और वाई न्यौतें लेकें उतरत जाये निबुरिया पेड़ा हौं
रूखा धन वाली घेटी राजा दोई गयी वे रे मंकवाये
हां तेवा बन बैना पहुंची निबौरिया बोरा हो
बोरी निबौरिया तोखां न्यौतें दे जाई ब. बारबबारा हो
तावें मोखां भिमते नेपिये भैयन की ओर
दोज के मंड़वा तीज के मड़या माडिनो
चौथ का लगना होवे धरम के दुवार
हों बिन मामा के मंड़वा री निबौरिया रे सूने पड़ा
जाता हो
तावें न्यौते दे दिये निबौरिया भैयन मोर वे
हो........ और हां.....

हूं......
निबुरिया घोरी थां फेरल करे चबाया वे
धैन हु वें थवांरिथे अपने सलोने काज
थां भजया मड़वन री जावे भजया काये पांवनो
जावे बेटी के संवारे सलोने काज
थां जब धैन ह हु निबोरिया के बिन घर हुने चवाया हो
बेटी थीं आ गये निबुरिया के बिचवार
बारे कन्हैया संवारे मोरी अमागन की सलोनो काजा री
लौट चदल दे निबोरिया करे रही चमकाय
लौट चदल जा धैन भवानी अपने वाली कांझ
चलत आवे भवानी पे टोड़ा कांझ थीं
खेलत-खेलत चोपर हो गयीं रे बारा बार
बारे सुरमा ने वीरों की बाज लगी रे सांच
थां लगत पांवे छट गये ते सुरमा के हरी दरबार वे
वोरे भीखा चवांदी कारन दिये सुनाय
वरे का कारन ते लागें पांवे छट गये हरी दरबार को
वरे कारन सुना वे भीखा बारा बेला के
हो...... वरे थां......

हूं......
वरे ऊपा री थीं भीखा उपर फेरिवी
बारे कन्हैया बा दिन की सुधि बिसर गयीं जा दिन गंगा बैठी मांझेधार में

थां वरे बेटी राजा के धैन हु रवे सलोने काजा हो
जा दिन भजन भजया मड़वन के मांझ
वरे तावें पांवे छट गये थे हरी के दरबारा वे
बारे सुरमा ने भीखा के दुने जवाब
भीखा चवांदी थां हुकुम करे लाखियो

औरे ब मीरा दे बदलत कढ़ये कावी रे फांक
हां दे बाढ्ये उबरिया उन घरियन धोरी धेन कौं
कब के मड़वा मायने कब कन रजन पौर के दुवार
हो बरे बाई दे बदलत कढ़ये मीरा धेन के मौरा कौं
हौरे ऊधा की मौरी गाठन मढ्यां घनेरे दाम
हां बरे चिरवा मढ्यां ऊधा की पठानी पाना कौ
राव के मढ्यां चोरा बारह बार
हां कौनी विधि दे छिनाऊं उबरिया धोरी धेन कौं
पांवन दे लिये घट पांवड़ी गांठन दे लिये घनेरे दाम
राव के दे लियौ चोरा मेहुल की मायं कौ
कौरे दे बाढ्यो उबरिया तो टोड़ा कावी रे फांक
बरे दुधे पकड़ गये बा भरिया ऊपर देवा कौ
एका बन चाले ऊधा दौड़ गये मंझराय
हां बरे तेज बन मीरा पहुंचे संधुरे बागा कौ
बीत के चिरवा दरयान लगीं फूलन लगी डार दे फैल
बरे धेन कौं आ गये दे पूरे बिसवाद बावत कौं
मौरे दुरना कारत बाये लहुरे भरन बाग
हां बब उठ के चरियां पड़े ये लहुरे बाग कौं
मीरा चलांदी पहुंचे उन घरियन धेन के दुवार कौं
बारे दुरना की दुवार पूछें घरम के दुवार
हो धेन तु कब के मड़वा मायने कब हुये रजन पहुंच के दोवार हो
वाचे ब्यौरे धेन तु दिये सुनाय
हां मैं कहिये उबरीया हो धेन तु तुमारे कावा कौं
बरे वाचे ब्यौरे धेना सुनाइयौ

हो....... बरे हां.......

हूं....

धेन लाड़ली हां थ्यौरे सुनायये मीरा बारहों
दूज का मड़वा मायनों तीज का हुवे सजन पहुंच के दुवार
हां थई थ्यौरे थारे कन्हैया हां सुनाथियो
कलत्व थावें मीरा थवोंदी हरी के दरबार
हां एका धन थाले थारे मीरा थो गडी
तीथ धन मीरा पहुंच गये हरी के दरबार
हां हाथ जोड़ विनती मीरा मैयन ते थे करी
दोज के मड़ना तीज के मायने चोथ हां होवें सजन पौर का दीवार
थाथे ऊधा जी संवारियो धेन के सलौने थाथा हो
हां अरे हैं कहिये हाथ जोड़ तथिया हरी थे विनती करें बारह थे बार
हां अरे मैं कहिये भाग उतरव जा रयो धेन के देवा हो
थारे मनैथिया के कहिये सलौने थाथ
हां अरे थाथे हरी मे चार दिन के धरा थये अवध के करारा थे
चौथे थे पांचे दिन न थलो गजियां न मिलें हमारे दरबार
अरे हवने थथना ऊधा जी दर के थे सुनो
ला रये उतारे सुरमा के हरी दरबार हों
थान थारव संवारे थारी मनेथ हों
थारे कन्हैया को बीत गये थे पांचक रोथा हो
थाथे गजियां मुली हरी के दरबारा थे

हो....... हरे हां......

—o—